कला का संरक्षक

पुष्यमित्र शुंग कला का संरक्षक था। उसने सांची के स्तूप का सौंदर्यीकरण कराया। भरहुत का स्तूप उसकी कलाप्रियता का एक उत्कृष्ट नमूना है। विदिशा के गजदक्ष शिल्पी द्वारा निर्मित सांची के तोरण द्वार आज भी उसकी कलात्मक प्रतिभा के श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

कला के अतिरिक्त पुष्यमित्र शुंग का शासनकाल साहित्य की उन्नति के लिए भी प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में पतंजलि का नाम विशेष तौर पर उल्लेखनीय है। पतंजलि ने पाणिनी के 'अष्टाध्यायी' पर महाभाष्य की रचना की।

पुष्यमित्र शुंग का मूल्यांकन

पौराणिक साक्ष्यों के अनुसार पुष्यमित्र शुंग ने 36 वर्षों तक शासन किया। वह उच्चकोटि का सेनानी, सेनापति तथा कुशल शासक था। उसने न केवल शुंग वंश की स्थापना की वरन् उसका विस्तार और संगठन भी किया। उसके साम्राज्य में पंजाब, जालंधर, स्यालकोट, विदिशा तथा नर्मदा तट के प्रान्त शामिल थे। उसने अपने देश को विदेशी यवन आक्रमणकारियों से रक्षा की।

पुष्यमित्र शुंग वैदिक धर्म का अनुयायी था, उसके द्वारा किये गये अश्वमेध यज्ञ का यही प्रमाण है।

पुष्यमित्र शुंग ने जो वैदिक धर्म के पुनःस्थापन के लिए कार्य किया उसी को आधार मानकर आगे चलकर चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने इस धर्म को न सिर्फ भारत में बल्कि पूरे विश्व में प्रचारित एवं प्रसारित करने का काम किया। इस दृष्टिकोण से पुष्यमित्र शुंग का नाम इतिहास में सदैव अग्रणी रहेगा।

Rajesh Kr Singh
Asst Prof History

Scanned with CamScanner

और लौटने को प्रेरित किया। भारत में वैदिक धर्म के प्रचार और साम्राज्य की सीमा विस्तार के लिए पुष्यमित्र शुंग ने अश्वमेध यज्ञ भी किया था। भारत के अधिकांश हिस्सों पर पुनः वैदिक धर्म की स्थापना हुई।

शासन प्रबंध

पुष्यमित्र प्राचीन मौर्य साम्राज्य के मध्यवर्ती भाग को सुरक्षित रखने में सफल रहा। उसके साम्राज्य में अयोध्या तथा विदिशा तक शामिल थे। विदिशा में उसका पुत्र अग्निमित्र शासन करता था।

मालविकाग्निमित्र के अनुसार विदर्भ का राज्य उसके अधीन था। सांकायन ग्रंथ दिव्यावदान के अनुसार जालंधर तथा शाकल (स्यालकोट) पर भी पुष्यमित्र का अधिकार कायम था।

इस प्रकार पुष्यमित्र शुंग का साम्राज्य उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में विदर्भ तक तथा पश्चिम में पंजाब से लेकर पूर्व में मगध तक विस्तृत था। पाटलिपुत्र अब भी इस साम्राज्य की राजधानी थी।

मनुस्मृति के आधार पर कहा जा सकता है कि सम्राट अपनी दैवीय उत्पत्ति में विश्वास करता था। साम्राज्य के विभिन्न भागों में राजकुमार अथवा राजकुल से संबंधित व्यक्ति को राज्यपाल नियुक्त करने की परंपरा चलती रही। वायुपुराण के अनुसार पुष्यमित्र ने अपने पुत्रों को अपने साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में सह-शासक नियुक्त कर रखा था। राजकुमार सेना का संचालन भी करते थे।

मालविकाग्निमित्र में 'अमात्य परिषद्' तथा महाभाष्य में 'सभा' का उल्लेख हुआ है। पट एवं प्रकार से मंत्री परिषद् थी। पुष्यमित्र ने आठ मंत्रियों को नियुक्ति दी थी। इस समय भी ग्राम शासन की सबसे छोटी इकाई होते थे।

Scanned with CamScanner

"शुंग वंश - पुष्यमित्र शुंग की उपलब्धियां"

B.A - SEM - II - Paper - CC-3 (मौर्योत्तर भारत)

शुंग वंश की स्थापना

1 May-2020

Page-1

मौर्य वंश का अंतिम राजा बृहद्रथ था, जिसका सेनापति पुष्यमित्र शुंग था। कहा जाता है कि एक दिन उसने अपनी सारी सेना को एकत्रित कर उसके प्रदर्शन की व्यवस्था की। मौर्य सम्राट बृहद्रथ को भी इस प्रदर्शन के आधार पर आमंत्रित किया गया। पुष्यमित्र ने मौर्य सेना को अपनी ओर मिला रखा था। उसने सेना के सामने ही बृहद्रथ की हत्या कर दी, और इस प्रकार उसने विशाल मगध साम्राज्य का शासक बनने के साथ ही शुंग वंश की नींव रखी। शुंग वंश का शासन उत्तर भारत मे 178 ई० पू० से 75 ई० पू० तक चला। यानि पूरे 103 वर्ष। पुष्यमित्र शुंग (178 ई०पू० से - 142 ई०पू०)

शासक बनते ही पुष्यमित्र शुंग ने सबसे पहले शासन प्रबंध में सुधार किया। सबसे पहले उसने एक सुसंगठित सेना का निर्माण शुरु किया।

पुष्यमित्र ने धीरे-धीरे उन राज्यों को पुनः मगध साम्राज्य के अधीन किया जो मौर्य वंश की दुर्बलता का लाभ उठाकर इससे अलग हो गये थे। ऐसे सभी राज्यों को मगध साम्राज्य के अधीनकर पुष्यमित्र ने अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

इसके बाद पुष्यमित्र शुंग ने भारत की ओर बढ़ रहे यूनानी शासकों को पीछे धकेला। उन्होंने यूनानियों को सिंधु से आगे नहीं आने दिया, जिसके बाद यूनानी फिर कभी भारत पर आक्रमण नहीं करसके।

वैदिक धर्म या ब्राह्मण धर्म की पुनःस्थापना।

अपने शासनकाल में पुष्यमित्र ने दुबारा से वैदिक सभ्यता का विस्तार किया। उसने बौद्ध धर्म स्वीकार किये लोगों को पुनः वैदिक धर्म की

Scanned with CamScanner